श्री दशावतार स्तोत्र संस्कृत में (Dashavtar Stotram In

श्री दशावतार स्तोत्र संस्कृत में (Dashavtar Stotram In
Sanskrit)

(1)
प्रलय-पयोधि-जले िृतवन असि वेदं
ववहिता-वहित्र-चरित्रं अखेदम
केशव िृत-मीना-शिीि जया जगदीिा िि

(2)
क्षितति इिा ववपुलतिं ततष्ठतत तव पृष्ठे
ििणी- िािणा-ककना-चक्र-गरिश्ते
केिव िृत-कूम-शिीिा जया जगदीिा िि

(3)
वितत दािना-सशखािे ििणी तव लग्न
िासिनी कलंक-कलेवा तनमग्ना
केिव िृत-शुक्र-रूप जया जगदीिा िि

(4)
तव कािा-कमला-वि नखम अदभुत-श्ृंगम
दसलत-हिििण्यकसशपु-तनु-भृंगम
केिव िृत-निरि-रूप जया जगदीिा िि

(5)
चालयसि ववक्रमणे बासलम अदभुत-वामन
पद-नख-तनि-जतनता-जन-पवन
केिव िृत-वामन-रूप जया जगदीिा िि

(6))
ित्रत्रय-रुधिि-मये जगत-अपगत-पापम
स्नैपयिी िसमता-भव-तपम
केिव िृत-भृगुपतत-रूप जया जगदीिा िि

(7)
ववतिसि हदिु िान हदक-पतत-कमनीयम
दाि-मुख-मौली-बलीम िमणीयम
केिव िृत-िाम -शिीिा जया जगदीिा िि

(8)
विसि वपुशी ववादे विनम जलदभम
िल-ितत-भीतत-समसलता-यमुनाभम

केिव िृत-िलाििािा-रूप जया जगदीिा िि

(9)

तनंदािी यज्ञ-विवि आिा श्ुतत-जातम

िदाय-ह्रदय दसशमता-पशु-घाटम

केिव िृत-बुद्ि-शीिा जया जगहदा िि

(10)

म्लेच्छ-तनवाि-तनिाने कलयािी किावलम

िूमकेतुम इव ककम अवप किलम

केिव िृत-कल्कक-शीिा जया जगहदा िि

(11)

श्ी-जयदेव-कावेि इदम् उहदतम् उदािम

श्ीनु िुख-दम शुभ- दम भव-िम

केिव िृत-दश-विा-रूपा जया जगदीिा िि

(12)

वेदं उद्िािते जगल्तत वािते भू-गोलं उद्त्रबभ्रते

दैत्यं दाियते बसलम चलयते िात्र-ियं कुवमते

पौलस्त्यं जयते िलं कलायते करुण्यम अतनवते

म्लेच्छन मुचमयते दाकृतत-कृते कृष्णाय तुभ्यम नमः

श्री दशावतार स्तोत्र का अर्थ (Dashavtar Stotram Meaning)

(1) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, जो मछली केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! जब दुतनया ववनाश केप्रचंड िमुद्र में डूब ििी थी, तो आपने एक ववशाल मछली का रूप िािण ककया औ बचे जुए जीवों को बचने केसलए एक ववशाल उतिं बचाने केसलए एक मछली बनकि जिाज केरूप में काम ककया।

(2) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, आप कछुए केरूप में प्रकट िोते िै!

आपकी जय िो! हदव्य कछुए केरूप में, शल्ततशाली मंदाि पवमत को अपनी ववशाल पीठ पि स्थावपत किते िैं, जो की िागि केमंथन केसलए आिाि केरूप में कायम किता िै। इि तिि केभािी बोझ को उठाने िे आपकी पीठ पि एक तनशान बन गया िै।

(3) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, आप िूअि केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! पृथ्वी, जो कभी ब्रहमांड केतनचले भाग में गभोदक मिािागि में डूबी िुई थी, अब चंद्रमा पि एक िब्बे केिमान, आपकेदाँत की नोक पि शांतत िे हटकी िुई िै।

(4) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि,आप आिो मनुष्य आिौ आिो सिंि केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! आपकेिुंदि िाथो केतेज़ नाखूनों िे िािाि हििण्यकश्यप केपेट को आिानी िे ककिंवस्तु केभांतत केआिानी अपने चमत्कारिक तेज पंजों िे अलग कि हदया िै।

(5) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, आप बौने ब्राहमण केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! आप अद्भुत बौने, िे अपने ववशाल कदमों केनाखूनों िे, आप िाजा बसल को अपनी चतुिाई िे मात देते िैं; आिौ गंगा का पानी, आपकेकमल केचिणों िे बिता िुआ, िभी जीववत प्राणणयों को मोि प्रदान किता िै।

(6) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, भृगुपतत [पिशुिाम] केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! आपने कुरुिेत्र में मािे गये दुष्ट ित्रत्रयों केशिीि िे बिने वाली ितत की नहदयों िे पृथ्वी को निलाया िै। आपकेमाध्यम िे, दुतनया केपापों िे छुटकािा समला िै, आिौ मानवता को भौततक अल्स्तत्व की निक िे िाित समलती िै।

(7) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, आप श्ी िामचतद्र केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! लंका केयुद्ि केमैदान में, आपने दि सिि वाले िािाि िावण को पिास्त ककया, आिौ उिकेसििों को इंद्र िहित दिों हदशाओं केदेवताओं को िमपूणम श्द्िांजसल केरूप में अवपमत ककया।

(8) नि केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, िल चलाने वाले बलिाम केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! अपने दील्ततमान श्वेत रूप पि, आप ताज़ी नीली बारिश केिंग की पोशाक पिनते िैं।

(9) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, बुद्ि केरूप में िोते िैं! आपकी जय िो! िे आिीम करुणा केबुद्ि, आप वैहदक बसलदानों केनाम पि तनदोर् प्राणणयों केप्रतत करुणा प्रदसशमत किते िैं।

(10) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, कल्कक केरूप में प्रकट िोते िैं! आपकी जय िो! जैिे आप कसलयुग केअंत में नीच आिौ बबमि लोगों का ववनाश किने के सलए एक भयानक तलवाि लेकि उभिते िैं।

(11) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, आपने इन दि ववववि अवतािों को िािण ककया िै! आप िभी को जय िो!

(12) िे केशव! ब्रहमांड केिवमप्रभु प्रभु! िे भगवान िरि, मैं आपको प्रणाम किता िूं, जो इन दि अवतािों में प्रकट िोते िैं। मत्स्य केरूप में आप दुतनया की ििा किते िैं; कूम केरूप में, आप मंदाि पवमत को अपने पीठ पि िािण किते िैं; विाि केरूप में, आप पृथ्वी को अपने दाँतों िे ऊपि उठाते िैं; निसिम्िा केरूप में, आपने िािाि हििण्यकश्यप की छाती फाड़ते िै। वामन केरूप में, आप िािाि िाजा बसल को पिास्त किते िैं; आिौ पिशुिाम केरूप में, आप दुष्ट ित्रत्रयों का नाश किते िैं। श्ी िामचतद्र केरूप में, आप िावण पि ववजय प्रातत किते िैं; आिौ बलिाम केरूप में, आप बुिाई को वश में किने केसलए िल चलाते िैं। भगवान बुद्ि के रूप में, आप िभी पीडड़त प्राणणयों केप्रतत करुणा प्रदसशमत किते िैं; आिौ कल्कक केरूप में,

आप अाशकाश को दूर करते हुए कलियुग के अंत की घोषणा करते हैं।